दिनांक: 26 अगस्त 2025

12वाँ दीक्षांत समारोह
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना

माननीय श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी शिक्षा मंत्री भारत सरकार का उदबोधन ..

नमस्कार

आईआईटी, पटना की 12वाँ कन्वोकेशन की इस मंच पर उपस्थित, भारत सरकार के वरिष्ठ मंत्री, आदरणीय गिरिराज सिंह जी, राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी, देश के एक जाने-माने विचारक आदरणीय बी आर शंकरानंद जी, इस इंस्टट्यूट के डायरेक्टर प्रोफेसर टी. एन. सिंह जी! मंच पर उपस्थित सभी एकेडमिशियंस बीओजी के मेंबर तथा यहां उपस्थित सभी महानुभाव, मेरे साथी पूर्व केंद्रीय मंत्री राम कृपाल यादव जी, विधायक मित्र संजीव चौरसिया जी, संजय मयूख जी तथा अन्य महानुभव गण, और जिन स्टूडेंट्स को आज कन्वोकेशन में स्नातक मिलने वाला है, या मिल रहा है, ऐसे विद्यार्थियों पर गर्व करने वाले उनके माता-पिता और परिवार के सदस्यगण, अन्य महानुभाव गण, विद्यार्थी गण, वर्तमान के विद्यार्थीगण, प्राध्यापक मित्रगण और पत्रकार मित्रगण।

किसी भी इंस्टीट्यूशन में जब इस प्रकार का कन्वोकेशन आयोजित किया जाता है तो उसकी कुछ परंपरा को भी मनाया जाता है। कन्वोकेशन में आना, मेडल देना, कुछ प्रेरक बात कहना और बच्चों को उस प्रेरक बात तक रुकना पड़ता है क्योंकि मेडल लेना है और मैं भी इस रिचुअल्स में आपके साथ शामिल होकर खुद को, गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मुझे भी आत्मसंतोष हो रहा है।

आज हमारे देश में, जैसे मुझे बताया गया कम से कम 700 से ज्यादा विद्यार्थियों को आज यहां कनवोकेशन में करीब 741 विद्यार्थियों को आज मानक दिया जाएगा। मित्रों मेरे पूर्व वक्ताओं में आदरणीय शंकरानंद जी, नित्यानंद राय जी और सर्वपरि गिरिराज जी ने अभी मैं भी उनसे जुड़ा हूं और मैं भी जुड़ कर, मैं मेरी अपेक्षाएं उनके साथ जोड़ता हूं जो अपेक्षा उन्होंने आपके सामने रखा, मैं भी उस अपेक्षा को आपके सामने रखता हूं।

मित्रों आप सभी लोग सौभाग्यशाली हैं। मैं थोड़ा और सामान्य बात करना चाहूंगा। गिरीराज जी तो जॉब क्रिएटर तक पहुंचे हैं।आईएएस बनना है कि नहीं बनना है, एक जिम्मेवार नागरिक के नाते उन्होंने आपके सामने यह विषय रखा है।मैं डायरेक्टर साहब को पूछ रहा था कि सर इसमें कितने राज्यों की विद्यार्थी पढ़ते हैं?

आईआईटी एक पैन इंडियन इंस्टीट्यूशन है। मैंने दो-तीन जानकारी ली, इसको एक नया सेकंड जनरेशन आईआईटी कहा जाता है। अभी तक भारत सरकार ने इसमें करीब ₹900 करोड़ रुपया खर्चा किया है। हमें अभी यह सौभाग्य मिल रहा है। भारत सरकार से, मोदी जी की सरकार ने इसमें और 644 करोड़ की फेज़ टू एक्सपेंशन का अभी-अभी अनुमोदन किया है। इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं।
मित्रों! इसमें पैन इंडियन स्टूडेंट पढ़ते हैं। मैं एक स्टैटिस्टिक्स पूछा कि इसमें कौन सी रैंक के स्टूडेंट पढ़ने आते हैं? उन्होंने कहा कि दो तीन जो अच्छे डिपार्टमेंट्स हैं उसमें लगभग 2000 के रेंज में चयनित जेई एडवांस के विद्यार्थी यहां प्रवेश के लिए आते हैं। अभी देश में जो अभिभावक हैं या जो अन्य मित्र हैं, देश में लगभग 20,000 जेई एडवांस के स्टूडेंट को मनोनीत किया जाता है और उनमें से 23 आईआईटी के एडमिशन होते हैं। मैं सबसे पहले आईआईटी के स्टूडेंट्स और फैकल्टी को बधाई देता हूं। पिछले 15 साल में आपने इस इंस्टीट्यूशन के मानक को बढ़ा के 2000 के एडमिशन रेंज पर ले आए और आने वाले दिनों में आप और बढ़िया करेंगे। मैं जब पूछा कि कितने राज्य से बच्चे पढ़ते हैं? उन्होंने कहा कि 23 राज्यों के बच्चे पढ़ते हैं।

अभी गिरिराज जी! कुछ बच्चों को अपने प्रांत में कहां से हैं? पूछ रहे थे, स्वाभाविक है। मैं थोड़ा उसको सार्वजनिक रूप में पूछना चाहता हूं, थोड़ा अलग तरीके से। यह जो हमारे भारत का पूर्वांचल है, बनारस से नीचे, हमारे पूर्वांचल तक, यानी बनारस से ले कर नीचे सीमांचल तक, ये जो गंगाजी की बेल्ट है, मुझे कहा गया कि आंध्र के बहुत से बच्चे पढ़ते हैं। गैर हिंदी भाषा-भाषी पट्टी के कितने बच्चे पढ़ते हैं जो आज 740 बच्चे डिग्री ले रहे हैं, वो तो हाथ खड़ा करें। कम है। मैं फिर आंध्रा, कर्नाटका, साउथ के कितने बच्चे हैं? वेस्ट के कितने बच्चे हैं? गुजरात, महाराष्ट्र? अच्छा, हिंदी बोलने वाले कितने बच्चे हैं? अपना हाथ खड़ा करें। ज्यादातर है।

आप जब यहां आए, फर्स्ट सेमेस्टर में, अच्छा इसमें जितने भी बच्चे किसी भी स्टेट के हों, आपके बोर्ड क्या रहे हैं? पहले नॉन-सीबीएसई वाले हाथ उठाए। नॉन-सीबीएसई। माने कोई आंध्र का होगा, कोई यूपी का होगा, कोई बिहार का होगा, कोई झारखंड होगा। लगभग 40% होंगे। सीबीएसई वाले? ज्यादा हैं। थोड़ा ईमानदारी से बोलना। नहीं, मैं आगे का प्रश्न पूछ रहा हूं। कोचिंग फैक्ट्री से निकल के कितने लोग आए हैं? कोई घर में पढ़ के आए हैं। ये सच नहीं बता रहे हो। अच्छा, कितने नवोदय में पढ़े हुए बच्चे हैं? हाथ खड़ा करें। है, 10-12 बच्चे।

केंद्रीय विद्यालय में। मैं बिहार के बच्चों को कोचिंग फैक्ट्री का नहीं बता रहा हूं। अच्छा पटना में कोचिंग करने वाले कितने बच्चे पढ़े हैं? वो तो कोई फैक्ट्री नहीं है, ये तो स्कूल है। चलो, एक बात बताओ।
सच बताइए, इस बार थोड़ा सच बताना। आप जब पहली बार पढ़ने आए आईआईटी में, उसमें आपको, देखो अभी तो पास कर चुके हो। आपकी जॉब भी लग चुकी होगी। प्लेसमेंट के एवरेज मीडियम एंड

इनकम भी आ गई है। कितने बच्चों को, इंग्लिश समझने में सहज हुई? सच सच बताना। अभी पास कर चुके हो।

कितने बच्चों को इंग्लिश समझने में सहज हुई? चलो, उसको मैं दूसरे तरीके से रखता हूं। अगर आपको, हिंदी में पहला सेमेस्टर मैं आगे की बात नहीं कह रहा हूं। पहला सेमेस्टर हिंदी में पढ़ाना पसंद करते या इंग्लिश में पढ़ाना पसंद करते? इंग्लिश में। क्यों? आप सियाने हो चुके हो इसीलिए।

मैं अभी आईएसएम धनबाद की इंडक्शन सेरेमनी में गया था। कन्वोकेशन के पहले संध्या में पहुंच गया था तो फर्स्ट ईयर के बच्चों से मैंने बातचीत किया।एक बच्चा मेरे कोई बिहार के हैं। गंगा के इस पार, माने दरभंगा के तरफ का, शायद, अब्दुल या ऐसा ही उसका कुछ नाम था। उन्होंने कहा कि सर फर्स्ट ईयर के एडमिशन में, फर्स्ट सेमेस्टर अगर हमको हिंदी में पढ़ाया जाता तो अच्छा होता। आप सियाने इसलिए हो चुके हो।

मैं दूसरा अनुभव बताता हूं। मैं कल, आईआईटी काउंसिल, 23 आईआईटी और एक आईआईएससी बेंगलुरु की डायरेक्टर्स एंड बीओजी चेयरमैन के साथ एक मीटिंग में मैं था।सिंह साहब भी वहीं थे। टी. एन सिंह साहब। हम लोग उसमें जब चर्चा की एक मॉडल लिखे, जोधपुर आईआईटी यह सेकंड जनरेशन के आईआईटी है। थोड़ा पटना के बराबर भी खुला है शायद, एक ही समय में खुला है। उन्होंने पिछले दो साल से एक अभ्यास आरंभ किया जिसमें यह कहा है। पहला दो सेमेस्टर, उनके वहां 400 बच्चे एडमिशन करते हैं। उन्होंने कहा पहला दो सेमेस्टर, फर्स्ट ईयर ऑफ द एजुकेशन, 25% बच्चे हिंदी में ही पढ़ते हैं। समान प्राध्यापक पढ़ाते हैं। जो प्राध्यापक क्लास में इंग्लिश में पढ़ाते हैं, वही प्राध्यापक उनको हिंदी में भी पढ़ाते हैं।

फर्स्ट, सेकंड सेमेस्टर में पढ़ने के बाद वो थर्ड सेमेस्टर तक इंग्लिश में असिमिलेशन करते हैं।चलो मैं तो आप आगे आ चुके हो और आगे आपको जॉब, रिसर्च में जाना है। कई बच्चे एमटेक भी करेंगे। कई बच्चे पीएचडी भी करेंगे। कई बच्चे जॉब में भी जाएंगे। मित्रों राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हम अभी लागू कर रहे हैं। उसमें हमने यह आग्रह किया है और यह विषय रखा है।यह एक रिसर्च के आधार पर कहा है कि अगर भारत को प्रधानमंत्री जी की आह्वान से 2047 अगर डेवलप्ड नेशन बनना है, विकसित राष्ट्र बनना है, तब गिरिराज जी ने जो अपेक्षा आपसे रखा ... आपने कितने लोग यहां आईआईटी, पटना में लिट्टी-चोखा खाए हो? पटना कैंपस में? लिट्टी चोखा खाना पसंद है? शायद अभी आप मैगी खाने में ज्यादा पसंद करते हो। मित्रों हमें वोकल फॉर लोकल होना पड़ेगा। हमारी अर्थनीति इस बार सरकार ने, भारत सरकार की बजट रखते हुए कहा कि हम मखाना बोर्ड बनाएंगे। मखाना बोर्ड इसलिए बनाएंगे क्योंकि बिहार की अर्थनीति के साथ मखाना का बहुत सीधा संपर्क है। क्या आईआईटी पटना, कभी सोच पाएगा कि

मखाना कि जैसे सुपर फूड, न्यूट्रिस फूड की वैल्यू एडिशन करते हुए बिहार की रूरल इकॉनोमी में, एग्रीकल्चर इकॉनमी में हम कुछ नया कर पाएंगे?

हम गंगा की किनारे बैठे हैं। मेरे को आज सौभाग्य मिला है। मैं सुबह-सुबह गंगा जी का दर्शन करने गया। मुझे दियारा देखने का सौभाग्य मिला। मेरे मित्र नित्यानंद राय जी को मैं कभी मिलने जाता हूं, हाजीपुर की तरफ।

वैशाली जिले में जाता हूं। उजियारपुर जाता हूं। वहां केला ही केला होता है।इधर भी केला होता है। गिरिराज जी, आजकल केले से भी कपड़े बनाए जाते हैं। केले के फाइबर से भी कपड़े बनते हैं। मित्रों हमारी उत्पादित चीजों में, नवाचार करके, इनोवेशन करके और उसको मूल्य देते हुए ही, हमारी बाजार की आवश्यकताओं को हम पूरा कर पाएंगे।

यह अपेक्षा आईआईटी से है इसे हमे समझना है और इसे पूरा करना है।इसके लिए हमें हमारी समझ, हमारी मातृभाषा में ही बढ़ानी पड़ेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने कहा है- प्रारंभिक अवस्था की पढ़ाई यानी स्कूल की, कॉलेज की नहीं।प्रारंभिक अवस्था की पढ़ाई हम मातृभाषा में ही करें, तो अच्छा है। मैं आपको तीन देशों के नाम बताता हूं। आज की विश्व में, टेक्नोलॉजी में, बहुत ऊंचे स्तर पे हैं। जापान, इजराइल और जर्मन - तीनों देश के नाम, मैं आपके सामने उल्लेख करता हूं। तीनों को जो आईआईटी वगैरह जिससे बच्चे पढ़ते होंगे वो इंग्लिश में नहीं पढ़ते हैं। आप पढ़ो, अच्छा करो। मेरा शुभेच्छा है लेकिन वो नहीं पढ़ते हैं।हमें तय करना पड़ेगा।

हमें बड़े-बड़े कंपनियों में सर्विस इंजीनियर बनना है, ना कि इनोवेटर बनना है। कम से कम समाज की आपसे अपेक्षा है।आपके मां-पिता जी की तात्कालिक अपेक्षा रह सकती है। आप नौकरी करो। मैं तो आपको गलत बात समझाने नहीं आया हूं। आप नौकरी मत करो।मैं एक संस्था कोलकाता का नाम लेता हूं।

इंडियन इंस्टट्यूट ऑफ केमिकल बायोलॉजी।देश आजाद नहीं हुआ था। देश के वैज्ञानिकों को लगा, मेरा मतलब है कि भारतीय मूल की वैज्ञानिकों को लगा कि चंद दिनों में हमारे देश को आजादी मिल जाएगी।

जब हमारे देश को आजादी मिलेगी, हमारे देश की स्वास्थ्य व्यवस्था कैसी होगी? हमारे देश में मेडिसिंस क्या-क्या लगेंगे? हमारे देश की चुनौतियां क्या-क्या है? तो कुछ मित्रों ने मिलके इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ केमिकल बायोलॉजी बनाया। जब इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ केमिकल बायोलॉजी बना, तो इस बार की कोरोना में हम कम से कम समय में वैक्सीन भी बना पाए। 100 साल पहले बनाए गए संस्था को इस बार देश के लिए कुछ करने का मौका मिला।

मित्रों अभी टी. एन. सिंह जी कह रहे थे कि हमारे बच्चे, विश्व के बड़े-बड़े कंपनियों के नाम ले रहे थे। मैं आपको बधाई देता हूं लेकिन मैं उससे बहुत प्रफुल्लित नहीं हूं। क्यों, मेरे देश के बच्चे जो बिल्कुल आपके बच्चे के बैकग्राउंड का हो।आपके घर में चिंता है, दायित्व है, अपेक्षा है। इसलिए आप जेई में बैठे। आप अच्छे विद्यार्थी हो। इसलिए जेई एडवांस को आपने क्रैक किया। आप अकेले ही नहीं किए।आपके घर में अन्य बच्चों की पढ़ाई कंप्रोमाइज हुई क्योंकि आपके मां-पिता जी ने आपकी विद्वता पर भरोसा किया और आप पर अधिक ध्यान दिए।एक ही परिवार से एक-दो लोग और भी आए होंगे लेकिन अमूमन मेरे हिसाब से एक परिवार से एक का ही है। जेई नीट में बैठने वाले बच्चे के घर में पूरा घर एक ही जगह पर फोकस रहता है। मां रात को सोती नहीं है, पिता जी ज्यादा समय काम करके घर की आमदनी बढ़ाने का प्रयास करते रहते हैं। कभी कभी छोटी बहन की पढ़ाई भी कंप्रोमाइज हो जाती है। आप पर इन्वेस्ट किया जाता है।

समाज आपको ऐसे आईआईटी, जो हमारी देश की आज सर्वश्रेष्ठ इंस्टीट्यूशन है, इस प्रकार के इंस्टीट्यूशन आपके लिए बनाये जा रहे हैं। क्या हम इस प्रकार के इंस्टिट्यूशन बना पाए हैं? इसीलिए कि हम ठीक है।
एक समय था। आज भी समय है। मैं नहीं कहूंगा आप कल सब नौकरी छोड़ कर, आप आपके उद्यम-धंधे में लग जाओ। ऐसा बिल्कुल मैं नहीं कहूंगा लेकिन आईआईटीएंस को मैं 10 साल की एक टाइमलाइन देता हूं और जो आज बच्चे पढ़ रहे हैं जो फर्स्ट ईयर में इस बार आए हैं, मैं उनको 5 साल का टाइमलाइन देता हूं। हमें देश में एक नई कल्चर बनानी पड़ेगी।

मित्रों विश्व की व्यवस्था बदल रही है।विश्व में किसी की मोनोपोली आने वाले दिनों में नहीं रहने वाली है। भारत में अकेले ही, भारत आज विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है साथ ही क्लाइमेट कंसर्न को लेकर ग्लोबल वार्मिंग के ऊपर सबसे अधिक चिंतित भी है, परन्तु उसका समाधान क्या है? उसका समाधान, कार्बन एमिशन को घटाने में है। कोयला, क्रूड ऑयल, गैस इसके बदले, अगर हम रिन्यूएबल एनर्जी पर, न्यू एज एनर्जी पर, जाएंगे तब हम इसको समाधान के रूप में ले पाएंगे।

मित्रों मैं गंगा जी के किनारे खड़ा होकर जितना भी थोड़ा-बहुत अध्ययन कर पाया हूं, मैं एक बात आपके सामने बता के जा रहा हूं। मित्रों युवा मित्रों! अगर बिहार चाहेगी, बिहार में जितना पानी है, बिहार में जितना एग्री वेस्ट है, मैं एग्री प्रोड्यूस नहीं कह रहा हूं। धान, गेहूं, सब्जी, केला हो जाने के बाद उसके पेड़, गन्ना, गन्ना की बगास, ये सबको अगर हम मिला दें, बिहार आधे भारत को रिन्यूएबल एनर्जी वितरित कर सकता है। यह मैं स्पष्ट रूप में आपके सामने कह सकता हूं।हमारे सामने दो रास्ते हैं। यह सारा चीज आज मैं सुबह-सुबह यहां के माननीय मुख्यमंत्री जी को मिलने के लिए गया था। मैं उनको लंबे समय से जानता हूं। वो माननीय प्रधानमंत्री जी की नितियों को बड़े आग्रह के साथ नीचे ला रहे हैं। जैसा कि बायो एनर्जी को जमीन पे लाना। एथेनॉल पर काफी काम हो रहा है।

मित्रों आज हमारी देश-दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ हम चौथे नंबर की इकॉनमी भी हैं। थोड़े दिन में हम तीसरे नंबर की इकॉनमी बन जाएंगे। आज हमारी इकॉनमी की सबसे अच्छी बात कि, यह इकॉनमी कैसे अच्छी है? उसकी साइज कैसी है? उसके जो दो-तीन मानक है।उसमें उस समाज की एनर्जी कंजमशन क्या है?
उसको अगर हम नाप पाते हैं तो उस समाज की डेवलपमेंट स्टैंडर्ड्स को हम माप पाते हैं। उसकी इकोनमिक साइज को माप पाते हैं।

आज भारत दुनिया की तीसरे नंबर की एनर्जी कंज्यूमर है। एब्सोल्यूट टर्म में, अमेरिका और चाइना के बाद, एब्सोल्यूट टर्म में, भारत नंबर थ्री एनर्जी कंज्यूमर है। अगर कैपिटा एनर्जी कंजम्पशन हम देखें, विश्व की एवरेज से, अमेरिका-चाइना का बात मैं ना कहूं, जापान की बात ना कहूं, ग्लोबल एवरेज जिसमें अफ्रीका भी है, जिसमें साउथ-ईस्ट एशिया की छोटे देश भी हैं। ये सब की कम खपत वाले से अगर मिला के सबका एवरेज निकालें तो ग्लोबल एवरेज अगर 100 यूनिट होती है, तो भारत की मात्र 35 यूनिट है। एंड 1/3 ऑफ़ द ग्लोबल एनर्जी कंजमशन की पैटर्न, भारत के साथ है यानी क्या होगा आने वाले दिनों में? जब हमारी इकॉनमी तीन नंबर की होगी, हमारी इकॉनमी जब डेवलप इकॉनमी के रास्ते में, एक या दो नंबर की होगी, तब हमारा एनर्जी कंजम्पशन बढ़ेगा।

हमारे सामने यह चुनौती होगी कि हम कन्वेंशनल एनर्जी सोर्स को कैसे यूज़ करें? कोयला, क्रूड ऑयल, गैस इन सबको हमें छोड़ना पड़ेगा। नए एनर्जी जैसे, सोलर एनर्जी में, भारत में 10 साल पहले सोलर एनर्जी में पर यूनिट हमारा कॉस्ट ₹18 से ₹2, ₹1.80 पैसा हो चुका है।

भारत हाइड्रोजन पर जोर दे रहा है। हाइड्रोजन के लिए पानी चाहिए। हाइड्रोजन के लिए इनोवेशन चाहिए। टेक्नोलॉजी चाहिए जिसे भारत भी पूरी शक्ति के साथ बनाने में लग चुका है।भारत हाइड्रोजन बनाने की कॉस्ट आज $3 है और आने वाले दिनों में अगर आईआईटी पटना प्रयास करती है तो यह $1 भी हो सकता है। मैं आपको मन बढ़ाने के लिए नहीं आया हूं। आपके यहां जितने सारे बिहार में, मैंने इसलिए पूछा आपने लिट्टी कितने लोगों ने खाया? सत्तू का शरबत कितने लोग पीते हो? इसमें आज सब जमीन से जुड़ते हो। आप थोड़ा अपने आस-पास में देखो।स्टीव जॉब, अपने आजकल बिहार में स्टीव जॉब को लेके दो लोग बहुत प्रतियोगिता करते हैं। कोई कहता है स्टीव जॉब कितना पढ़ें हैं?
कोई कहता है स्टीव जॉब पढ़ें कि नहीं पढ़ें है? मैं उस विवाद में नहीं जाता हूं लेकिन स्टीव जॉब ने काम किया। स्टीव जॉब की समाज में आवश्यकता क्या है? समाज में किस चीज में नयापन होगा? इस मौलिक फर्क को उन्होंने पढ़ा।

आईआईटी में हमें समाज की आवश्यकता के अनुकूल नेशनल प्रायोरिटी क्या क्या है? नेशनल प्रायोरिटी के हिसाब से हम, उस बारीकी को अगर हम समझ पाएंगे तब हम भी जॉब सीकर के बदले, जॉब क्रिएटर हो पाएंगे। ये प्रेरणा आईआईटी ही बाकी विद्यार्थियों को और नौजवानों को दे सकता है। इसी अपेक्षा के नाते मैं आज आपके पास आया हूं। और मैं दो-तीन अनुरोध करने भी आया हूं। आपकी क्रिटिकल थिंकिंग और भी स्पष्ट होगी अगर आप विषय को अपने ही भाषा में, चाहे वो हिंदी या भोजपुरी हो, में पढ़ेंगे।

मैं कभी-कभी कुछ मित्रों से बातचीत करते हुए कुछ मित्र मेरे को कहते हैं कि मातृभाषा क्यों जरूरी है? मौलिक चिंतन के लिए, क्रिटिकल थिंकिंग के लिए। उन्होंने कहा कोई मरीज जाता है। आप सभी मरीज के पास जाते हो। यहां आईआईटी में डिस्पेंसरी है कि नहीं है? आप जाते हो कि नहीं जाते हो वहां? क्यों भाई? जाते हो डिस्पेंसरी में? अरे बोलो हां या ना? बचपन में कभी गये कि नहीं गया? सेमेस्टर वन में भी गये थे? तब उसको डॉक्टर को अपनी दवा यानी दर्द, अपने कष्ट, इंग्लिश में बताया था या हिंदी में बताया था? भाई चुप क्यों हो गए? किसमें बताया होगा आपने? भोजपुरी में भी बताया होगा। आप आंध्र का कोई मित्र होगा तो तेलुगु भाषा में समझाया होगा और डॉक्टर दवाई उसे इंग्लिश में लिखा होगा। जब आप फार्मेसी में गए होंगे, फार्मेसी वाले आपसे किस विषय में बात किये? वह किस भाषा में बात किये होंगे? अगर एक दर्द, एक कष्ट, के समाधान के माध्यम अपना मातृभाषा बनता है। समाज के कष्ट को समझने के लिए आपको मातृभाषा को समझना पड़ेगा।

देखो मित्रों नौकरी तो बहुत लोग करेंगे और नौकरी पे लोगों के माध्यम से देश परिवर्तन नहीं हुआ है। आप आईआईटी नौकरी-पेशे में बंधने वाले लोग नहीं हो। आप दुनिया को मार्गदर्शन दिखाने वाले नौजवान हो। आपको जॉब क्रिएटर बनना है। आज की दुनिया की समस्या क्या है? मैंने क्लाइमेट कंसर्न जैसा एक ही विषय बताया है।आज बायोटेक्नोलॉजी, बायोइकोनमी, बायोसाइंस सर्वोपरि है। जीनोम सीक्वेंस की बात की जाती है। जीनोम जेनेटिक कोडिंग-डिकोडिंग की बात कही जाती है। कौन सी? मैं कुछ दिन पहले कोलकाता में था। खड़गपुर आईआईटी की रिसर्च पार्क में। मुझे साउथ की एक लड़की मिली। अच्छी हिंदी बोलती थी।उन्होंने कहा था मैं भेगन फीस बना रही हूं। मेरे बायो साइंस की रिसर्च भेगन फिश यानी गिरिराज जी भी अभी तो शाकाहारी और शाकाहारी फिश भी खा सकते हैं। वह रिसर्च उसमें हो रहा है। उतना ही प्रोटीन, विषय तो प्रोटीन का ही है ना? एक टेस्ट का है, एक प्रोटीन का है।

आज इस प्रकार, भारत के गरीबों के घर में, प्रोटीन पहुंचाने के लिए हमारी आलू, हमारी साग-सब्जी, हमारी बैंगन, हमारी भिंडी, हमारी कौन सी सांग से ज्यादा वैल्यू एडेड प्रोटीन मिलेगा? ये बायोसाइंस में उल्लेख है। इसको रिसर्च करके देश में न्यूट्रिशन लेवल बढ़ाना, देश को विकसित करना है। देश के नागरिकों की स्वास्थ्य को ठीक करना। ये कौन करेगा? यह बायो साइंस ही करेगा। यह ग्लोबल वर्ल्ड का

प्रॉब्लम है।हमारी भारत की भी प्रॉब्लम है।हमें ट्रांसलेशनल इनोवेशन करना पड़ेगा।टेक्नोलॉजी कॉर्टिंग टेक्नोलॉजी में हमें काम करना पड़ेगा। इन सबके लिए हमें समझना पड़ेगा। इसीलिए मैंने भाषा से शुरू किया।

हमारे सामने तीन चीजों की चुनौती है। हम 21 सेंचुरी के समय जो इकट्ठा हुए, जो विश्व की जिस प्रकार के पूरा यूक्रेन, रशिया, भारत, हमको भारत के ऊपर किसी ने टैरिफ लगाया और 25% एक्स्ट्रा क्योंकि हम और किसी देश से तेल खरीदते हैं।एनर्जी खरीदते हैं। भारत के अंदर 600 मिलियन मेट्रिक टन बायोमास पड़ा है।अब पटना आईआईटी से जा के हवाई अड्डा तक जाओ, रेलवे स्टेशन तक जाओ। कहीं भी जाओ, आपको बायोमास ही दिखेगा। कचरा के रूप में पड़ा है। ये सब एनर्जी बन सकता है। 600 मिलियन मेट्रिक टन अगर एनर्जी बनता है तो भारत नेट एनर्जी इंपोर्टर्स है। आज तो हम 10 लाख करोड़ रुपया का एनर्जी इंपोर्ट कर रहे हैं। अगर हम अपना टेक्नोलॉजी बनाएंगे। हम हमारी एनर्जी को एक्सपोर्ट भी कर सकते हैं। हम मुनाफा कमा सकते हैं।

मित्रों आज यह सब करने के लिए 100 साल पहले इस समय में नौजवान देश के लिए मरने के लिए तैयार होते थे।मैं आपको ये अनुरोध नहीं करने आया हूं कि आपको मरना चाहिए। अभी आपको अपने देश के लिए जीना चाहिए। जैसे देश ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी। उसी प्रकार आपको इस बार, आने वाले 25-30 साल, देश की समृद्धि के लिए सेनानी बनना पड़ेगा।देश को समृद्ध बनाना पड़ेगा।इसलिए लंबी सोच रखनी पड़ेगी।

आज एआई बड़ी डिसरप्टर होके आई है। हमें, जहां-जहां, जिस-जिस क्षेत्र में काम करते हैं, हमें एआई टूल्स को यूज़ करने की थोड़ी कल्पना करिए। उसमें हमारी पूरा डाटा एनालिटिक्स करके अगर हम, आने वाले 25 साल, 50 साल, 100 साल में देख पाए कि क्या होगा, उसकी अगर मैपिंग कर दें, तो उसमें से हमारा इनोवेटिव माइंड कुछ रास्ता निकाल सकता है।इसके लिए मैं, आप लोग, हम सब सौभाग्यशाली हैं। यह धरती सहज धरती नहीं है। यहां चंद्रगुप्त मौर्य बने हैं।यहां चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य को बनाया है। यहां के स्थानीय समाज चाणक्य ही है।आप सौभाग्यशाली हैं। उस चाणक्य के पास आप चार साल आईआईटी जैसे संस्था में रहे। आपको चंद्रगुप्त मौर्य बनना पड़ेगा।

भारत को 21वीं सदी में दुनिया का एक नंबर देश बनाना है। 2047 तक देश को नंबर एक पर लाना है। हमको एक स्वराज्य से, स्वराज्य से समृद्धि भारत बनाना है। तब, हमें जिम्मेवारी लेना होगा।

मित्रों हम प्रजातंत्र में विश्वास करते हैं। हम प्रजातंत्र के इलाके में बैठे हैं। वैशाली में दुनिया की पहली प्रजातंत्र आई है। इसे हम मानते हैं।मित्रों प्रजातंत्र में एक शर्त है। प्रजातंत्र में सभी लोग अपने अधिकार को लेकर चिंतित होते हैं। मित्रों अधिकार तब पूरा हो पाएगा जब कोई इसके लिए जिम्मेदारी लेगा।

भारत एक नौजवानों की देश है। भारत आने वाले 25-30 साल तक यंग नेशन की तरह माना जाएगा। उस यंग नेशन की जिम्मेवारी कौन लेगा? जॉब तो सब मांगेंगे। जॉब क्रिएट होने के बाद ही तो जॉब कोई करेगा? मित्रों मैं आपको इसीलिए आज के इस समावर्तन में आपके पास यह अपेक्षा रखने आया हूं कि हमें अपनी जिंदगी की प्रायोरिटी तय करना है। जॉब क्रिएटर बनना है। क्रिटिकल थिंकर बनना है। फंडामेंटल्स तक पहुंचना है। ये सारे पहुंचने के लिए हमे खुद को तैयार करना पड़ेगा।

फिलहाल अभी नौकरी करिए, शादी भी करिए, मां-पिता जी को संतुष्ट भी रखिए लेकिन समाज इतने में संतुष्ट नहीं होना है। समाज में आपके परिवार भी है। समाज समृद्ध होगा तो आपकी समृद्धि बनी रहेगी। आपके निजी समृद्धि से कुछ नहीं होता है। समाज समृद्ध नहीं रहेगा। समाज स्वावलंबी नहीं होगा। समाज आत्मनिर्भर नहीं होगा तो हम एक समय में जिंदगी इस क्षण तक पहुंच जाएंगे तब शायद हमें पछतावा होना। आइए मित्रों! हम सब, यही समय, सही समय को आकलन करते हुए समाज के दायित्व को स्वीकार करें। आपके दायित्व लेने से किसी का अधिकार पूरा होगा।

बहुत धन्यवाद।

******